International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 572-573

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 572-573
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2017
Accepted: 26-12-2017

डॉ. युगलकिशोर शर्मा
प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, से.म. बि.रा. महाविद्यालय, नाथद्वारा
पता– 29, समर्पित कोम्पलेक्स, पुलां, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. युगलकिशोर शर्मा
प्राध्यापक, चित्रकला विभाग, से.म. बि.रा. महाविद्यालय, नाथद्वारा
पता– 29, समर्पित कोम्पलेक्स, पुलां, उदयपुर, राजस्थान, भारत

चितराम–पिछवाई की परम्परा

डॉ. युगलकिशोर शर्मा

सारांशः
नाथद्वारा मंदिर में श्रीनाथजी के पृष्ठभाग में लटकाये जाने वाले पर्दे को 'पिछवाई' कहा जाता है। चित्रित पिछवाई को चितराम की पिछवाई है जो नाथद्वारा चित्रकला की प्रमुख विधा है। कृष्ण–लीला विषयक चित्रित पिछवाईयां अब मंदिर के अतिरिक्त हवेलियों व घरों में भी लटकायी जाती है। कई प्राचीन पिछवाईयां देश–विदेश के संग्रहालयों में प्रदर्शित है। अतः छोटी से लेकर बडी पिछवाईयो की चित्रण– विधा पर शोध महत्वपूर्ण हो जाता है।

मुख्य शब्दः– पिछवाई (Wall Hanging), हिलकारी (Golden Ink)

प्रस्तावनाः
भारतीय चित्रकला में राजस्थान की चित्रकला में प्रमुख स्थान है और राजस्थान की चित्रकला में नाथद्वारा चित्रशैली एक मात्र जीवित है, विशेषकर उसकी पिछवाई चित्रण विधा के रूप में। अतः पिछवाई चित्रण विधा पर शोध पत्र महत्वपूर्ण होगा।
नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में श्रीनाथजी (श्री–विग्रह) के पृष्ठ भाग में लटकाये जाने वाले पर्दे को 'पिछवाई' कहते है। ये पिछवाई कई प्रकार की होती है, जैसे– गोटे–किनारी की पिछवाई, जरी की पिछवाई, कसीदेकारी की पिछवाई, मोतियों की पिछवाई, जरदोज़ी मे काम वाली पिछवाई, चितराम की पिछवाई आदि। इन सभी पिछवाईयों में चितराम (चित्रण) की पिछवाई सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इसमे उत्सव के अनुरूप कृष्ण–लीला विषयक आख्यानों का भावपूर्ण चित्रण भक्त को आत्म–विभोर कर देता हैं चित्रित पिछवाई से न केवल श्रीनाथजी के निज–मंदिर का आन्तरिक भाग अत्यन्त आकर्षक बन जाता है बल्कि उत्सव का अतिरेक बढ़ने से भक्त आनन्दित हो जाता है।
पिछवाई परम्परा का प्रारंभ जब वल्लभाचार्य जी (1478–1530 ई.) ने 1519 ई. में ब्रज के गोवर्धन–पर्वत पर श्रीनाथजी को मंदिर में प्रतिष्ठित कर पाटोत्सव किया तब से ही माना जा सकता है। तत्कालीन अष्टछापीय कवि 'गोविन्ददासजी' ने अपने पद में 'पिछवाई' शब्द का प्रयोग किया– 'गुलाबी सिंहासन गुलाबी 'पिछवाई' गुलाबी कंठमाल धारिए।'[1] किन्तु चित्रित पिछवाई 18वीं शताब्दी से मिलती है जो नाथद्वारा चित्रशैली की प्रमुख विधा है। यद्यपि दक्कन–शैली गुजरात शैली, कोटा–शैली, बूंदी–शैली, किशनगढ–शैली, जोधपुर–शैली आदि शैलियों के पिछवाईयां बनी है किन्तु प्रारंभिक एवं सर्वाधिक नाथद्वारा शैली में ही।
नाथद्वारा के चित्रकारों ने कृष्ण–लीला के विभिन्न विषयों पर पिछवाई चित्रण किया है जिनमें से जन्माष्टमी की पिछवाई, गोपाष्टमी की पिछवाई, रास–लीला की पिछवाई, शरद–पूर्णिमा की पिछवाई, ब्रजयात्रा की पिछवाई, अन्नकूट–उत्सव की पिछवाई, कमलन की पिछवाई, मोरकुटी की पिछवाई, आदि प्रमुख है। ये पिछवाईयां ऋतु, उत्सव, त्यौहार, विशेष श्रृंगार आदि पर प्रदर्शित की जाती है। प्रारंभ में पिछवाईयां श्रीनाथ जी के मंदिर में ही प्रदर्शित की जाती थी किंतु बाद में अन्य पुष्टिमार्गीय मंदिरों, देवालयों, हवेलियों एवं वैष्णवों के घरो में भी लगाई जाने लगी। इस कारण पिछवाईयो की साइज में भी बदलाव आया और अब यह छोटी से लेकर बडी साइज में बनने लगी। वर्तमान में तो इसका स्वरूप ओर बदल गया और ये अब घरों की सजावट के रूप में भी है जिससे ये देश–विदेश में प्रसिद्ध है। नाथद्वारा की ये पिछवाईयां राष्ट्रीय कला संग्रहालय नई दिल्ली, केलिको म्युजियम अहमदाबाद, भारत कला भवन बनारस, कार्लमान संग्रहालय न्यूयार्क आदि में संग्रहित है।
चितराम की पिछवाई केम्ब्रिक सूती कपड़े पर बनायी जाती है। सबसे पहले कपड़े के दोनों तरफ दो इंच के करीब का नेफा सिलवाया जाता है जिसे लकड़ी या पाईप पर लटकाया जा सके। तत्पश्चात कपड़े को पानी में गला कर सुखाया जाता है। कपड़ा सूख जाने के बाद उसे मैदे की लई से किसी हार्ड बोर्ड या फर्श पर चिपकाया जाता है जिससे कपड़े की सलवटे न रहे और उस पर चित्रण भी आसानी से हो।

सबसे पहले पेन्सिल से बार्डर का भाग निश्चित कर चित्रण विषय के अनुसार रेखाकंन किया जाता है। रेखांकन को बाद में रंग से पक्का किया जाता है। तत्पश्चात आकारों एवं पृष्ठभूमि में रंगाकंन किया जाता है। रंगाकंन पूर्ण करने के पश्चात उस पर बटर पेपर रख कर हकीक पत्थर के घोटे से हल्के हाथों से घुटाई की जाती है ताकि रंग एक समान होकर धरातल चिकना हो जाय। कई चित्रकार पिछवाई को फर्श से हटा कर उल्टी रख कर घुटाई करते है। घुटाई के पश्चात पतले ब्रश से महीन रेखाओं से आकारों को बांधा जाता है जिसे 'लिखाई' कहते है। लिखाई के उपरान्त छाया से उभार आदि दर्शाया जाता है। अन्त मे सुनहरी रंग का प्रयोग करते है जिसे 'हिलकारी' कहते है। बाद में पुनः लिखाई, अलंकरण, प्रकृति,–चित्रण आदि का कार्य किया जाता है। पिछवाई तैयार हो जाने पर उसे बोर्ड या फर्श से हटा लिया जाता है तथा नेफे में पाइप लगा कर उसे लपेट लिया जाता है। यह एक प्रकार से स्क्रोल की तरह से है जिसे कई बार खोल कर पुनः लपेटा जा सकता है।

नाथद्वारा शैली की पिछवाई परम्परा कई वर्षो पुरानी है जो आज भी अपनी पहचान बनाये हुए है।

निष्कर्ष:

चित्रित पिछवाई के संदर्भ में नाथद्वारा चित्रशैली की यह प्राचीन परम्परा रही है। ये चित्रित पिछवाईयां मंदिर में प्रदर्शित होने से भक्तों को उत्सवों के अनुरूप कृष्ण–लीला विषयक आख्यानों से आत्म–विभोर कर देती है। इन पिछवाईयों से न केवल मंदिर का आन्तरिक भाग आकर्षक बन जाता है बल्कि उत्सव का अतिरेक बढने से भक्त आनन्दित हो जाता है। चित्रकारों को पिछवाई निर्माण का प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है जिससे यह प्राचीन परम्परा जीवित रह सकेगी।

संदर्भः

1. Kay Talwar, Kalyan Krishan. Indian Pigment Painting on Cloth (Ahmedabad. Calico Museum, 1979, 11.